वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैदराबाद
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 7-12-2007
कटिंग नंबर: .....

# जो जागृत, उसके सब कार्य सफल और समृद्धिदायक

– महर्षि महेश योगी

अपना भारत वेद-विज्ञान का ज्ञाता है। पूरे विश्व को वह अपने इस ज्ञान से प्रकाशित कर सकता है। वेदं परमं श्रुति प्रमाणं है। तात्विक रूप उसकी सत्ता है। वेद की महिमा 'हेयम् दुःखम् अनागतम्' की है। भारतीय वेद परंपरा में ज्ञान का, कर्म का जो विधान है, उसमें बड़ा वेद-विज्ञान है। यह आत्मचेतना को जागृत करने का ज्ञान-विज्ञान है और इसी से भारत ने अपनी विशिष्ट पहचान बना रखी है। इसी ज्ञान-विज्ञान से भारत भारत कहलाता है। आजकल जो गड़बड़ी हो गई है, वह इसलिये है कि आत्मचेतना को जगाने के विधानों से हम भटक गये हैं। आत्मचेतना के जागृत न होने से गड़बड़ हो गई है।

जब तक वैदिक शिक्षा में रहते हैं, सब ठीक रहता है। इसका आधार ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद है। भारत के घर-घर में वेद-विज्ञान, परंपरा में यह ज्ञान भरा पड़ा है। दैनिक त्रिकाल संध्यावंदन में, विभिन्न पर्व, त्योहारों, उत्सवों की परंपरा में इसी ज्ञान को, इसी प्रभाव को जागृत किया जाता है। आत्मचेतना जागृत होने से सर्वज्ञता, सर्वसमर्थता आ जाती है। फिर सारे कार्य देवी-देवता करने लगते हैं। दैवी शक्ति में पोषण मिलने लगता है। संकल्प को भावातीत सत्ता में लेने से सारे देवी-देवता कार्य करने में सहयोग करने लगते हैं। ज्ञान को क्रिया के क्षेत्र में प्रमाणित करने के लिए कुछ विशेष नहीं करना पड़ता है। आत्मचेतना को जगा लेते हैं तो प्रमाणित हो जाता है।

*जैसे अंधेरे को दूर करने के लिए उजाले को फैलाना नहीं पड़ता, उसे जगाना पड़ता है, उजाला हुआ तो वह स्वयं फैल जाता है। सिर्फ जागृत करने की बात है। जैसे उजाला होने पर अंधेरा गायब हो जाता है, सब कुछ प्रकाशित हो जाता है, वैसे ही आत्मचेतना के जागृत होने से सारा अज्ञान दूर हो जाता है। सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। सर्वज्ञता आ जाती है, सर्वसमर्थता आ जाती है।*

वैदिक शिक्षा, वैदिक स्वास्थ्य, वैदिक कृषि, वैदिक प्रशासन, वैदिक वास्तु अपनाने में सब कुछ स्वमेव सुचारू चलने लगता है। वैदिक ग्रहशांति, यज्ञों, पंचदेवताओं की आराधना, त्रिकाल संध्यावंदन से दैवी-शक्तियों का जागरण होता है। अज्ञानता के अंधेरे को दूर करने का एक ही उपाय है कि ज्ञान के उजाले को ले आओ और यह उजाला बिना वेद-विद्या के नहीं आयेगा। जैसे अंधेरे को दूर करने के लिए उजाले को फैलाना नहीं पड़ता, उसे जगाना पड़ता है, उजाला हुआ तो वह स्वयं फैल जाता है। सिर्फ जागृत करने की बात है। जैसे उजाला होने पर अंधेरा गायब हो जाता है, सब कुछ प्रकाशित हो जाता है, वैसे ही आत्मचेतना के जागृत होने से सारा अज्ञान दूर हो जाता है। सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। सर्वज्ञता आ जाती है, सर्वसमर्थता आ जाती है। किसी भी कार्य को करने में सफलता और समृद्धि आती ही आती है।